B.A. II Part 17/2/21 डा० [illegible]
Hindi Hons [illegible] कॉ०, गढ़वा

प्रश्न :- पंत के कल्पना तत्व पर प्रकाश डालें।

पंतजी सुकुमार एवं कोमल कल्पना के कवि हैं। इनकी कल्पना कोमलता के आवरण में प्रस्फुटित हुई है। पंत के काव्य का तादात्म्य प्रकृति के सुकुमार रूप से है। इनके काव्य में प्रकृति जड़ मात्र रूप न लेकर सचेतन है। प्रकृति के रमणीयता को छोड़कर बाला के बाल, जाल में भी उसके नेत्र नहीं उलझते हैं। वह तो WORDS WORTH के तरह प्रकृति की गोद में फूली फूली बनाकर उसका चिरसंगी बनना चाहता है -

" छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल जाल में, कैसे उलझा दूँ लोचन,
भूल अभी से इस जग को।"

पंत की कोमल प्रकृति सचेतन नारी रूप में उसमें धड़कन, स्पंदन और सिहरन है। कोमल कल्पना के सहारे पंत ने प्रकृति के सजीव एवं रमणीय चित्र प्रस्तुत किया है। पंतजी ने स्वयं कहा है - " उषा, संध्या, फूल, कोपल, कलरव, मर्मर, ओसों के बूंद और नदी निर्झर मेरे एकाकी किशोर मन को सदैव अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं और सौन्दर्य के अनेक सद्य: स्फुट उपकरणों से प्रकृति की मनोरम मूर्ति रचकर मेरी कल्पना समय-समय पर उसे काव्य-मंदिर में प्रतिष्ठित करती रही है।"

पंत ने अपने काव्य में कहीं प्रकृति में दिव्य नारी की सुकुमार छवि का आरोप कर उसके कोमल-कल्पना से युक्त मनोरम चित्र अंकित किए हैं तो कहीं प्रकृति जन्य नौका-विहार में कोमल कल्पना का सुन्दर रूप स्पष्ट किया है, यथा-

"शान्त स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्ज्वल,
अपलक नीरव सैकत शय्या पर दुग्ध धवल,
तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल, लेटी है श्रान्त क्लान्त निश्चल।"

पंत जी ने अपने काव्य में नारी के सहज स्वाभाविक सौन्दर्य का अपूर्व चित्र प्रस्तुत किया है। इनके काव्य में नारी अनन्त सुषमा से मंडित है। वह देवी, माँ, सहचरी, प्राण आदि सभी कुछ है। उसके ये सभी रूप पवित्रता, कोमलता, अलौकिक उज्ज्वलता से आलोकित है। नारी के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए निम्न उदाहरण में पंत की कोमल कल्पना निखर उठी है।—